JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय साहित्य में स्वामी विवेकानंद की वैचारिक क्रांति का महत्व

डॉ. कविता शर्मा
शिक्षा और अनुसंधान संस्थान
मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़

स्वामी विवेकानंद का जन्म, बाल्यावस्था और शिक्षा

स्वामी विवेकानंद जी का बचपन का नाम नरेंद्रनाथ था। उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में हुआ था (इनकी जयंती को 'अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। **बाल्यावस्था** से ही उनके व्यवहार के दो पहलू देखने को मिले हैं । एक तरफ़ उनका धर्मनिष्ठ और दयालु स्वभाव था तो और दूसरी तरफ़ साहस के किसी भी कार्य को करने के लिए उनकी तत्परता। चूँकि उनका पूरा परिवार आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ था इसलिए उन्हें उचित धार्मिक परवरिश मिली।

स्वामी विवेकानंद को 1870 में श्री ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वारा स्थापित स्कूल में भर्ती कराया गया था। स्कूल में रहते हुए उन्होंने पढ़ाई के साथ-साथ शरीर निर्माण दोनों पर ध्यान केंद्रित किया। स्वामी जी अपनी मातृभाषा का बहुत सम्मान करते थे । ऐसी ही एक घटना उस समय की है जब में विद्यालय उनकी अंग्रेजी भाषा की कक्षा थी, उन्होंने कहा, "मैं गोरे गुरु की भाषा नहीं सीखूंगा।" कम से कम ७-८ महीने तक उन्होंने अंग्रेजी भाषा की उपेक्षा की बाद में उन्होंने मजबूरी में अंग्रेजी सीखी। स्वामी विवेकानंद ने अपनी मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके अपने परिवार और स्कूल के गौरव को बढ़ाया। फिर उन्होंने कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया और दर्शनशास्त्र में एमए किया।

स्वामी विवेकानंद द्वारा अपने गुरु से मिलना और संन्यास स्वीकार करना

नरेंद्र के एक रिश्तेदार डॉ. रामचंद्र दत्त, रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। जिनका पालन पोषण उनके घर में ही हुआ था उन्होंने देखा कि नरेंद्र धार्मिक भावनाओं से इस हद तक प्रेरित थे कि वे बचपन में ही त्याग पर विचार कर रहे थे। उन्होंने एक बार नरेंद्र से कहा था, "भैया, यदि जीवन में आपका एकमात्र लक्ष्य हमारे धर्म को आगे बढ़ाना है, तो तुम दक्षिणेश्वरी जाओ और श्री रामकृष्ण से मिलो।" नरेंद्र श्री रामकृष्ण से उनके पड़ोसी सुरेंद्रनाथ के घर पर ही मिले। शुरू में कुछ दिनों के लिए श्री रामकृष्ण ने नरेंद्रनाथ को एक पल के लिए भी अपना साथ नहीं छोड़ने दिया। उन्होंने नरेंद्र को अपने बगल में बिठाया और उन्हें बहुत बातो को लेकर सलाह दी। अकेले होने पर उन दोनों के बीच काफ़ी विचार-विमर्ष होता था। श्री रामकृष्ण ने नरेंद्रनाथ को सन्यास के मार्ग पर दीक्षा दी और उन्हें स्वामी विवेकानंद नाम दिया, उन्होन नरेंद्र को उनके अधूरे मिशन को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी देने का फैसला किया था। एक दिन श्री रामकृष्ण ने एक कागज के

टुकड़े पर लिखा, "नरेंद्र जनता को प्रबुद्ध करने का कार्य करेंगे।" कुछ झिझकते हुए नरेंद्रनाथ ने उत्तर दिया, "मैं यह सब नहीं कर पाऊंगा।" श्री रामकृष्ण ने तुरंत बड़े संकल्प के साथ कहा, "क्या? नहीं हो पाएगा? तुम्हारी हड्डियाँ यह काम करेंगी?"

स्वामी विवेकानंद द्वारा रामकृष्ण मिशन की स्थापना

श्री रामकृष्ण परमहंस की महासमाधि के बाद स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण के एक अन्य शिष्य तारकनाथ के साथ रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसने कोलकाता के पास वराहनगर में एक जीर्ण-शीर्ण इमारत से की अपने मिशन की शुरुआत की। पहले यह माना जाता था कि यह जगह भूतिया घर थी लेकिन विवेकानंद जी के विश्वास ने जल्दी ही इसे गलत साबित कर दिया। विवेकानंद ने श्री रामकृष्ण की नश्वर राख और उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली कुछ अन्य वस्तुओं को इस स्थान पर रखा था तथा पूर्ण विश्वास के साथ अपने मिशन की शुरुआत की। जल्द ही श्री रामकृष्ण के शिष्य वहाँ रहने लगे।

स्वामी विवेकानंद जी के विचारो का महत्व:

स्वामी विवेकानंद जी के "वेदांत" के तूफानी विचित्रों ने यूरोप के देशो में क्रांति ला दी थी जिस ने दूसरे देशो में धर्मांतरण पर अंकुश लगा दिया था। स्वामी विवेकानंद के काल में भारत पर अंग्रेजों का शासन था। इसाइयो की भारतीय साहित्य के प्रति छोटी सोच तथा यूरोपीय साहित्य को श्रेष्ठ सिद्ध करने की उनकी रणनिति ने भारतीय साहित्य की छवि को वैश्विक सतर पर काफ़ी हद तक धूमिल कर दिया था ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली, उनकी संस्कृति, लोगों को गुमराह करने वाली ईसाई मिशनरियों की रणनीतियों और उनके साहित्य के प्रभाव के कारण, भारत के संपन्न वर्ग ने भावना विकसित कि हिंदू धर्म और संस्कृति बहुत निम्न स्तर की, अमानवीय और बर्बर है। जिस के परिणामस्वरूप बहुत से हिंदुओं ने बपतिस्मा लिया होगा और ईसाई धर्म अपनाया होगा; लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वामी विवेकानंद द्वारा अन्य देशों में 'वेदांत' के उग्र प्रचार के कारण इस पर अंकुश लगा दिया था।

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं में आध्यात्मिक एकता और नई चेतना पैदा करने का संदेश दिया:

स्वामी विवेकानंद ने भारत का प्रतिनिधित्व किया और परिणामस्वरूप, 1893 के वर्ष में शिकागो में सभी धर्मों के लिए एक विश्व सम्मेलन में हिंदू धर्म का आयोजन किया गया। स्वामी विवेकानंद ने इस सम्मेलन में दुनिया को आध्यात्मिक एकता का संदेश दिया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि आध्यात्मिक प्रगति के साथ-साथ भौतिकवादी/सांसारिक प्रगति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद के मार्गदर्शन ने युवाओं में नई चेतना और उत्साह पैदा करने में मदद की।

स्वामी विवेकानंद ने आध्यात्मिक प्रवचनों से लोगों में देशभक्ति की भावना को जगाया:

भारत में लगातार होते आक्रमण, अनैतिकता, लूटपाट, भारतीय महिलाओं का उत्पीड़न और हिंसा ने हिंदुओं को मानसिक रूप से कुचल दिया था। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण के संदेश का प्रचार करने और हिंदुओं को अवसाद से बाहर निकालने और लोगों में उत्पन्न मानसिकता को हराने का मिशन चलाया। स्वामी विवेकानंद ने इस महान मिशन के लिए पूरे भारत की यात्रा की और अपने आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से लोगों में उत्साह और देशभक्ति पैदा की। इसके अलावा, उन्होंने पूरी दुनिया को हिंदू धर्म और हिंदुस्तान के महत्व का एहसास कराया।

विश्व धर्म संसद में चमके स्वामी विवेकानंद

एक रात स्वामी विवेकानंद आधे सोए हुए थे, उन्होंने एक चमत्कारी सपना देखा। श्री रामकृष्ण का तेजतर्रार रूप समुद्र के ऊपर से आगे बढ़ रहा था और स्वामीजी को अपने पीछे चलने के लिए कह रहा था। स्वामी विवेकानंद ने अपनी आँखें खोलीं। उसका हृदय अवर्णनीय परमानंद से भर गया। उसी समय उसने बहुत स्पष्ट रूप से एक दिव्य आवाज सुनी, जो कह रही थी, "जाओ"। फिर उन्होंने विदेश जाने का संकल्प लिया और एक-दो दिन में सारी व्यवस्थाएं पूरी कर लीं।

विश्व धर्म संसद के लिए प्रस्थान

स्वामी विवेकानंद 31 मई, 1893 को 'प्रायद्वीप' जहाज पर सवार होकर भारतीय तटों से रवाना हुए। वे 15 जुलाई को कनाडा के वैंकूवर बंदरगाह पहुंचे। वहां से उन्होंने ट्रेन से अमेरिका के प्रसिद्ध शहर शिकागो की यात्रा की। उन्हें पता चला कि 11 सितंबर को विश्व धर्म संसद का आयोजन होने जा रहा है।स्वामी विवेकानंद के पास इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आवश्यक निमंत्रण नहीं था। इसके अलावा प्रतिनिधि के रूप में पंजीकरण करने की तिथि भी समाप्त हो गई थी। फिर भी वे जहां भी जाते थे लोग उनकी ओर आकर्षित होते थे। पहले ही दिन उनकी मुलाकात प्रो. जे.एच. राइट, जो हार्वर्ड विश्वविद्यालय में ग्रीक पढ़ा रहे थे। दोनों के बीच करीब चार घंटे तक बातचीत हुई। स्वामी विवेकानंद की प्रतिभा और बुद्धि से प्रोफेसर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने स्वामीजी को विश्व धर्म संसद में एक प्रतिनिधि के रूप में प्रवेश देने की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली।

स्वामी विवेकानंद ने शिकागो इंटरफेथ सम्मेलन में भाग लिया

स्वामी विवेकानंद हिंदू धर्म के सच्चे प्रतिनिधि साबित हुए क्योंकि उन्होंने 11 सितंबर, 1893 को शिकागो में विश्व धर्म संसद के मंच से पूरी दुनिया में सहिष्णुता के लिए अपनी उत्कट अपील की। इस संत को अनुमति देने के लिए यह ईश्वरीय योजना रही होगी। दुनिया को महान हिंदू धर्म से परिचित कराने के लिए। इस सम्मेलन का उद्घाटन विभिन्न धर्मगुरुओं द्वारा मंत्र जाप से किया गया। यह सम्मेलन की मधुर शुरुआत थी। मंच पर, केंद्र में, अमेरिका के रोमन कैथोलिक संप्रदाय के धार्मिक प्रमुख थे।स्वामी विवेकानंद किसी विशेष संप्रदाय के प्रतिनिधि नहीं थे। वे समस्त भारतवर्ष के सनातन हिन्दू वैदिक धर्म के प्रतिनिधि के रूप में सम्मेलन में पहुंचे थे। सम्मेलन में लगभग 6 से 7 हजार देवियों और सज्जनों ने भाग लिया। अध्यक्ष के निर्देशानुसार मंच पर मौजूद प्रत्येक प्रतिनिधि अपना पूर्व-तैयार भाषण पढ़ रहा था। स्वामी विवेकानंद ने कोई लिखित भाषण तैयार नहीं किया था। अंत में वह अपने गुरु को एक मौन प्रार्थना भेजकर अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ। उन्होंने सम्मेलन को "अमेरिका की बहनों और भाइयों" शब्दों के साथ संबोधित किया। इन शब्दों में इतनी चमत्कारी ताकत थी कि हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी और तालियां बजती रहीं। उन करुणामयी शब्दों में भावनात्मक अपील ने हर दिल को झकझोर कर रख दिया था। यह पहली बार था जब किसी वक्ता ने पूरी मानव जाति को 'बहनों और भाइयों' के रूप में संदर्भित किया था। इसके अलावा उन्होंने अपने शानदार और शक्तिशाली भाषण से उपस्थित सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

स्वामी विवेकानंद ने महसूस किया कि हिंदू समाज में दुनिया के लिए आध्यात्मिक शिक्षक बनने की क्षमता है। सदियों बाद किसी ने हिंदू समाज को फिर से अपने व्यापक क्षितिज दिखाए थे। फिर भी स्वामी जी ने किसी धर्म की आलोचना नहीं की। उन्होंने किसी धर्म का अपमान नहीं किया। उन्होंने केवल उस गंदगी को मिटा दिया जो हिंदू धर्म के साथ दुर्व्यवहार और उसके आक्रमणकारियों के हाथों अपमान के कारण जमा हुई थी। स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म को अपना स्वयं का विकिरण दिखाया और इसे विश्व धर्म संसद के सर्वोच्च आसन पर रखा। हिंदुस्थान के बारे में बोलते हुए वे कहते हैं कि यह एक पवित्र भूमि है, एक दिव्य

उद्देश्य वाली भूमि है। हिन्दुस्थान अध्यात्म और आत्मनिरीक्षण का धाम है। प्राचीन काल से ही, धार्मिक सिद्धांतों के संस्थापक यहाँ पैदा हुए थे। उन्होंने सनातन सत्य - सनातन सत्य के शीतल जल से झुलसी हुई पृथ्वी को तृप्त कर दिया। यह एकमात्र ऐसी भूमि है जहाँ कोई न केवल सहिष्णुता का अनुभव कर सकता है बल्कि अन्य धर्मों के प्रति भी स्नेह का अनुभव कर सकता है।

स्वामी विवेकानंद के उपदेश

भारत को उसके योग्य गौरव के साथ पेश करने के बाद स्वामी विवेकानंद एक भव्य स्वागत के लिए कोलकाता वापस लौटे। 'मेरे आंदोलन की योजना', 'भारत के रोजमर्रा के जीवन में वेदांत', 'दिन के लिए हमारा कर्तव्य', 'भारत के महान पुत्र', 'भारत का भविष्य' कुछ ऐसे विषय थे जिन पर उन्होंने व्याख्यान देना शुरू किया। उनके सभी भाषणों में उनकी भाषा हर समय दीप्तिमान रही। उनके तीक्ष्ण विचारों का भारतीय और विदेशी दोनों दिमागों पर बहुत प्रभाव पड़ा। वे वेदांत के संदेश को पूरी दुनिया में फैला सकते थे। इस प्रकार उन्होंने आर्य धर्म के लिए जीत हासिल की, आर्य लोग और आर्य ने अपना सही प्रतिष्ठित स्थान हासिल किया।

'दूसरों की भलाई के लिए खुद को कुर्बान करना ही असली संन्यास है:

स्वामी विवेकानंद भारत की आध्यात्मिक विरासत के लिए बहुत सम्मान रखते थे, लेकिन उन्होंने अपने भाषणों के माध्यम से इसके अवांछनीय रीति-रिवाजों और घृणित जाति व्यवस्था पर हमला किया। इस प्रकार उनके भाषणों ने हिंदू समाज को भी जगाने का काम किया। उनकी प्रबल अपील उनके सुप्त देशवासियों के दिलों में चमक रही थी। उनके होने की स्वाभाविक स्थिति निराकार शाश्वत इकाई यानी निर्विकार समाधि का ध्यान करने की होती। फिर भी उन्होंने अपने स्वयं के त्याग को अलग रखा और आम लोगों के नश्वर संघर्षों, दुखों और खुशियों के बारे में सोचा; जीवन भर उन्होंने उनके उत्थान के लिए प्रयास किया। 'असली संन्यास दूसरों की भलाई के लिए स्वयं को बलिदान करना है' - उन्होंने इस सिद्धांत को जीया।

शिक्षा प्रणाली पर स्वामी विवेकानंद का ज्ञानवर्धक मार्गदर्शन:

शिक्षा ऐसी हो कि वह 'मानव' और चरित्र का निर्माण करे! ज्ञान का बोझ जीवन भर नहीं समझा लेकिन किसी तरह दिमाग में भर जाने का मतलब शिक्षा नहीं है ! शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह 'मानव', अच्छे चरित्र का निर्माण करे, जिसमें अच्छे विचार हों। यदि आप ४-५ अच्छे विचार सीखते हैं और उन्हें अपने अंदर बिठाने की कोशिश करते हैं, तो आपकी शिक्षा पूरे पुस्तकालय को दिल से सीखने से बेहतर होगी! आज की शिक्षा 'मनुष्य' बनाने में पूरी तरह विफल रही है, लेकिन भयानक दोष पैदा कर चुकी है! क्या आप समझते हैं कि आध्यात्मिक और सांसारिक शिक्षा की जिम्मेदारी हमें उठानी चाहिए? आज आपको दी जाने वाली शिक्षा में कुछ अच्छी चीजें हैं लेकिन इतने भयानक दोष हैं कि अच्छी चीजें अप्रभावी होती जा रही हैं। पहली बात यह है कि शिक्षा 'मानव' का निर्माण नहीं कर रही है बल्कि यह पूरी तरह से नकारात्मक शिक्षा है। ऐसी नकारात्मक शिक्षा या शिक्षा जो केवल (हमारी संस्कृति) की निंदा करना सिखाती है, वह मृत्यु से भी बदतर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

S.V. Bharathi : Educational Philosophy of Swami Vivekananda Discovery Publishing House

S.K. Chaudhary : Great Political Thinker: Swami Vivekanand Sonali Publications

Gambhirananda (Swami.) The life of Swami Vivekananda, by his eastern and western disciples Advaita Ashrama

Vivekananda, Swami (2006). The Indispensable Vivekananda: An Anthology for Our Times. Orient Black swan

Karan Singh (Sadr-i-Riyasat of Jammu and Kashmir) The Message of Swami Vivekananda Swami Vivekananda Centenary Celebration and Vivekananda Rock Memorial Committee, Publication Departme.